

## रतनचन्द्र जैन मुख्तार व्यक्तित्व और कृतित्व (फोल्डर नं. ०१२००९)

मुख्य टाइटल	
आशीर्वचन	
समर्पण	
अभिमत-----	८
आद्य व्यक्तव्य-----	१४
आद्य व्यक्तव्य-----	२०
अनुक्रम-----	२७
व्यक्तित्व एवं छाया छवियाँ	
पं. रतनचन्द्र जैन मुख्तार-जीवनक्रम-----	१-१२
पं. जीकी विविध छाया छवियाँ-----	१ से ८
आशीर्वचन, मंगलकामना, श्रद्धाञ्जलि और संस्मरण	
सिद्धान्तज्ञागुणी स्व. रतचन्द्र-----	१३
मंगल भावना-----	१३
अभीक्षणज्ञानोपयोगी-----	१४
अन्तर्ध्वनि-----	१६
स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र पूज्यते-----	१७
पण्डितरत्न-----	१७
महोपकारी मुख्तारजी-----	१८
समतायुक्त विद्वता-----	१९
मंगल कामना-----	२१
जिनवाणी की चिरस्मरणीय सेवा-----	२१
सरस्वती के उपासक-बाबूजी-----	२२
स्वाध्याय ही परम तप है-----	२३
स्याद्वाद शासन के समर्थ प्रहरी-----	२३
मूक विद्याव्यासंगी-----	२३
लघुकाय और अगाधज्ञान-----	२४
प्रेरणास्पद व्यक्तित्व-----	२५
मुख्तारजी की जैन शासन सेवा-----	२५
साधानारत महाविद्वान्-----	२७
यथार्थ आत्मार्थी-----	२८
आगममार्गदर्शक रतन-----	२९
हम पर आपके अपार उपकार हैं-----	३०
प्रतिभा के प्यारे सपूत-----	३१

अद्वितीय महापुरुष -----	३१
परम श्रद्धेय-----	३३
सरस्वती उपासक-श्रुतानुरागी महात्मा-----	३३
एक आदरणीय सत्पुरुष-----	३४
स्मरणशक्ति के धनी -----	३५
आगमज्ञानी अटूट श्रद्धानी -----	३५
श्रद्धा सुमन -----	३६
सिद्धांतशास्त्रों के विशिष्ट ज्ञाता मुख्तारश्री-----	३६
विशिष्ट विद्वान् -----	३७
सिद्धान्त सूर्य -----	३७
अद्वितीय प्रश्नसह-----	३८
मोक्षमार्ग के पथिक-----	३८
अध्यवसायी विद्वान् -----	४१
ज्ञान और चारित्र के धनी -----	४१
विनयांजलि-----	४२
विशिष्ट मेधावी प्रज्ञातिशायी मुख्तार साहब-----	४३
तपस्वी साधक-----	४४
सिद्धान्त ग्रंथों के पारगामी विद्वान् -----	४५
जैनागमों का सचेतन पुस्तकालय-----	४६
आदर्श जीवन -----	४७
श्रद्धाञ्जलि-----	४९
अनुभवी विद्वान्-----	५०
सरस्वती के वरद पुत्र-----	५०
सेवाभावी, विनयशील मुख्तार सा.-----	५१
पूज्य गुरुवर्य रतनचन्द्र मुख्तार -----	५२
तत्त्वज्ञानी पण्डितजी -----	५३
निरभिमान व्यक्तित्व-----	५३
ज्ञान और चारित्र का मणिकांचन योग-----	५४
जीवनदानी श्रुतसेवी -----	५४
महान् आत्मा मुख्तार सा-----	५६
स्मृति के दर्पणमें-----	५८
बाबूजी-इस शताब्दी के टोडरमल -----	६२
अद्वितीय विद्वान् -----	६४
रतचन्द्र मुख्तार, सहारनपुर वाले-----	६४
शीलवान गुणवान आप थे-----	६६

सफल स्वाध्यायी -----	६७
अपूरणीय क्षति -----	६७
सरल परिणामी -----	६८
विनम्रता की सजीव मूर्ति -----	६८
निस्पृह आत्मार्थी -----	७०
विद्वानों की दृष्टि में-स्व. पं. रतनचन्द्र मुख्तार -----	७१
पूज्य श्री नेमिचन्द्र मुख्तार -----	७५
<b>कृतित्व-शंका समाधान</b>	
(क) प्रथमानुयोग -----	७६-९९
अनन्तवीर्य मुनि का केवलज्ञान के बाद ५०० धनुष ऊर्ध्वगमन -----	७६
अनादि जैनधर्म के कथंचित् प्रवर्तक -----	७६
अनुबद्ध केवलियों के नाम व संख्या -----	७८
आदिनाथ बाहुबली आदि कर्मभूमियां थे -----	७९
आदिनाथ के सहस्रवर्ष तक शुभ भाव रहे थे -----	७९
युगादि में इंद्र द्वारा नवी जिन मन्दिर स्थापन -----	८०
इमली के पत्तों प्रमाण अवशिष्ट भव वाले मुनि कैसे थे -----	८०
कृष्ण ने कौसी पर्याय में सम्यक्त्व प्राप्त किया -----	८०
कृष्ण अब सोलहवें तीर्थंकर होंगे-----	८१
वीर निर्वाण के पश्चात् गौतम आदि ८ केवली हुए-----	८१
भगवान महावीर के बाद के केवलियों की संख्या-----	८२
जीवन्धर, महावीर के पश्चात् मोक्ष गये -----	८३
तीर्थंकरों के लिए स्वर्ग से भोजन -----	८३
तीर्थंकरों का शरीर जन्म से ही परमौदारिक कहा जा सकता है -----	८४
तीर्थंकरों के जन्म से पूर्व रत्नवृष्टि का कारण एवं रत्नचर्चों का स्वामी कौन-----	८६
तीर्थंकर प्रतिमाओं के चिह्न कैसे नियत होते हैं-----	८७
किसी भी तीर्थंकर की आयु पूर्वकोटि नहीं हुई-----	८७
नाभिराय और मरुदेवी जुगलिया नहीं थे-----	८७
नारद चरमशरीरी नहीं होते-----	८८
नारद के आहार, आचरण, गति आदि का वर्णन -----	८८
नारायण व प्रतिनारायण के भी अनेक शरीर -----	८९
जिनके शरीर नहीं होता, उनके पसीना आदि भई नहीं होते-----	८९
नेमिनाथ के विहार के साथ-साथ लौकान्तिक देवों का गमन -----	८९
पुराणों में उल्लिखित कामविषयक वर्णन भी अश्लीलता की कोटि में नहीं-----	८९
बाहुबली निःशल्य थे-----	९०
केवलज्ञान होते ही बाहुबली का उपसर्ग दूर -----	९०

केवलज्ञान होने पर छिन्न भिन्न अंगोपांग भी पूर्ववत् पूर्ण हो जाते हैं-----	१०
भद्रबाहु आचार्य श्रुतकेवली थे । गणधर भी सकलश्रुतज्ञ होते हैं-----	११
भरत ने चक्र नहीं चलाया यह कथन मिथ्या है-----	१२
भरत व कैकेयी को परम व निर्मल सम्यक्त्व क हुआ-----	१३
भरतचक्रवर्ती के दीक्षागुरु का उल्लेख आगम में नहीं मिलता-----	१३
बलदेव ने बिना गुरु के स्वयं दीक्षा ग्रहण कर ली-----	१३
मारीचि को उसी भव में सम्यक्त्व हुआ था या नहीं-----	१४
मरुदेवी का जन्म क्षेत्र-----	१४
मरुदेवी आदि रजस्वला नहीं होती थी-----	१५
पाँखुडी लेकर भगवान के दर्शनार्थ जाने वाला मंडक समकिती था या नहीं-----	१५
रुद्र उत्सर्पिणी काल में भी होते हैं-----	१५
विदेह में धनरथ तीर्थकर-----	१५
शलाकापुरुष ६३ न होकर ५८ ही कैसे हुए-----	१६
श्रेणिक का अकाल-मरण नहीं हुआ-----	१६
श्रेणिक सम्यक्त्व सहित नरक में गये-----	१६
सगर के आठ हजार पुत्र मरे या मूर्च्छित हुए-----	१७
समन्तभद्राचार्य की भावी गति-----	१७
सीता का जीव प्रतीन्द्र सम्बोधन हेतु नरक में नहीं गया-----	१८
त्रिलोक मण्डन हाथी का क्रिया कलाप एवं मोक्षमार्ग में प्रवेश-----	१९
(ख) करणानुयोग-----	१००-६१९
गुणस्थान चर्चा-----	१००
समवसरण-----	१८७
जीवसमास-----	१९२
पर्याप्ति-----	१९४
प्राण-----	२०३
संज्ञा-----	२०६
मार्गणा-----	२०६
गतिमार्गणा-----	२०६
इन्द्रिय मार्गणा-----	२१८
काय मार्गणा-----	२३३
योग मार्गणा-----	२४७
वेद मार्गणा-----	२६९
कषाय मार्गणा-----	२७२
ज्ञान मार्गणा-----	२७३
संयम मार्गणा-----	३०६

दर्शन मार्गणा-----	३११
लेश्या मार्गणा -----	३१५
भव्य मार्गणा -----	३२६
सम्यक्त्व मार्गणा -----	३३१
उपशम -----	३३१
क्षयोपशम-वेदकसम्यक्त्व -----	३४९
क्षायिक सम्यक्त्व -----	३५९
सम्यक्त्व विविध -----	३६९
संज्ञी मार्गणा -----	४०२
आहार मार्गणा -----	४०५
बन्ध -----	४०९
उदय -----	४४४
सत्त्व -----	४९२
गुणश्रेणी, स्थिति अनु. काण्डक-----	५०३
अनुभाग-----	५०५
अविभाग प्रतिच्छेद-----	५०८
करण -----	५१३
भाव-----	५२२
पुद्गल वर्गणा-----	५२९
शरीर -----	५३५
समुद्घात -----	५४२
अकालमरण कदलीघात -----	५५२
कुल, योनि, जन्म -----	५७९
गत्याति-----	५८२
लोक रचना-----	६०३
काल -----	६१२
श्रेणी, मान -----	६१६
(ग) चरणानुयोग -----	६२०-८७२
चारित्र सामान्य-----	६२०
अष्ट मूलगुण-----	६३५
सप्त व्यसन-----	६४०
भक्ष्याभक्ष्य -----	६४६
दान -----	६५१
अभिषेक-पूजा-भक्ति -----	६५८
अव्रती की क्रियाएँ -----	६८३

देशव्रत -----	७०४
ध्यान -----	७२०
अन्नगार चारित्र-----	७५५
स्वरूपाचरणचारित्र -----	८२६